सूरह — एक कहानी

सूरह अल-कौसर

बे-इंतिहा ख़ैर

पूरा सफ़र — सबसे छोटी सूरह, सबसे बड़ा वादा —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 108 • 3 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इन्ना अ'तैनाकल्-कौसर

1. बेशक हमने आपको कौसर अता फ़रमाया।

फ़-सल्लि लि-रब्बिक वन्हर

2. तो अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए और क़ुर्बानी कीजिए।

इन्ना शानि-अक हुवल्-अब्तर

3. बेशक आपका दुश्मन ही जड़ से कटा हुआ है।

अल-कौसर

'कसरत' से — बे-इंतिहा, छलकती हुई फ़रावानी।

लि-रब्बिक

2. 'अपने रब के लिए' — दोनों इबादतें सिर्फ़ उसी के लिए।

वो ताना जिसने यह सूरह उतरवाई

बेटा, यह क़ुरआन की सबसे छोटी सूरह है — तीन आयतें, दस लफ़्ज़ — और इसके पीछे नबी ﷺ की ज़िंदगी का एक गहरा ज़ख़्म है।

आप ﷺ के बेटे हुए, और वो बचपन ही में वफ़ात पा गए। अरब के मुआशरे में आदमी का सिलसिला उसके बेटों से चलता था; जो शख़्स बेटा छोड़ कर न जाए, उसे ख़त्म शुदा समझा जाता था — उसका नाम उसी के साथ ख़त्म। अरबों के पास ऐसे शख़्स के लिए एक ख़ास ताना था: 'अब्तर' — कटा हुआ, जैसे उस जानवर की दुम काट दी गई हो। मतलब: तुम्हारा कोई मुस्तक़बिल नहीं, कोई सिलसिला नहीं, कोई बक़िया नहीं।

और जब आप ﷺ के बेटे वफ़ात पा गए, तो दुश्मनों ने यही ताना इस्तेमाल किया। रिवायतों में आस बिन वाइल का ज़िक्र है — और उनके अलावा दूसरे भी — जो कहते थे: छोड़ो इसे, यह अब्तर है; जब यह मर जाएगा तो इसका ज़िक्र कट जाएगा और हमें इससे निजात मिल जाएगी।

बेटा, इस बे-रहमी को महसूस कीजिए। यह वो शख़्स है जिसने अपने बच्चों को अपने

हाथों दफ़नाया है — और उसके दुश्मन उन्हीं क़ब्रों को हथियार बना रहे हैं।

और अल्लाह ने जवाब दिया। किसी लंबी बहस से नहीं। तीन आयतों से — जिन्होंने ताने को उलट कर रख दिया और मामला हमेशा के लिए तय कर दिया।

हमने आपको कौसर दिया

'इन्ना अ'तैनाकल्-कौसर — बेशक हमने आपको कौसर अता फ़रमाया।'

बेटा, तरकीब देखिए: 'इन्ना' — बेशक हम — ताकीद का अंदाज़; 'अ'तैना' — हमने दे दिया, माज़ी के सीग़े में, हो चुका, तय हो चुका; 'क' — आपको, ख़ास तौर पर आपको।

और 'अल-कौसर' लफ़्ज़ 'कसरत' से है, मगर मुबालग़े के सीग़े में: सिर्फ़ बहुत नहीं, बल्कि छलकती हुई, हद से बढ़ी हुई फ़रावानी।

यह है क्या? ख़ुद नबी ﷺ ने इसकी तफ़्सीर फ़रमाई। आप ﷺ ने फ़रमाया: यह एक नहर है जिसका मेरे रब ने मुझसे वादा किया है, जिस पर कसरत से ख़ैर है; यह एक हौज़ है जिस पर मेरी उम्मत क़ियामत के दिन आएगी। दूसरी रिवायतों में आपने फ़रमाया कि उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है, शहद से ज़्यादा मीठा, उसके किनारे सोने के हैं, उसके प्याले सितारों की तादाद के बराबर — और जो उससे एक बार पी लेगा वो कभी प्यासा नहीं होगा।

और उलमा ने कहा कि कौसर में नहर के अलावा और भी बहुत कुछ शामिल है: हर वो फ़रावानी जो अल्लाह ने उन्हें दी — क़ुरआन, नुबुव्वत, शफ़ाअत, यह उम्मत, उनके ज़िक्र की बुलंदी, और अज़ीम अज्र।

बेटा, अब देखिए कि इलाही जवाब किस तरह बनता है। उन्होंने कहा: तुम कटे हुए हो, तुम्हारे पास कुछ नहीं। अल्लाह ने फ़रमाया: मैंने तुम्हें फ़रावानी दी है — इतनी कि उसके नाम का मतलब ही छलकना है।

और देखिए कि सूरह ने हिसाब कैसे चुकाया। उन्होंने उनके नुक़सान को बेटों में गिना। अल्लाह ने जवाब में जन्नत की नहर दी और अरबों लोगों की उम्मत। बेटा, अल्लाह अपने महबूब बंदों के साथ यही करते हैं: जो चीज़ हटाई जाती है, उसकी जगह बिल्कुल

एक दूसरे दर्जे की चीज़ दी जाती है।

और बेटा, जब अगली बार आप कोई महबूब चीज़ खोएँ, तो यह याद रखिए। किसी को किसी नबी के कौसर का वादा नहीं है — मगर उसूल वही है: अल्लाह मोमिन से जो लेते हैं, उसकी जगह कुछ बेहतर देने की तैयारी कर रहे होते हैं, या यहाँ या वहाँ।

तो नमाज़ पढ़िए और क़ुर्बानी कीजिए

'फ़-सल्लि लि-रब्बिक वन्हर — तो अपने रब के लिए नमाज़ पढ़िए, और क़ुर्बानी कीजिए।'

बेटा, लफ़्ज़ 'फ़' पर ग़ौर कीजिए — तो, इसलिए। हुक्म उस अता से निकल रहा है: क्योंकि मैंने तुम्हें यह सब दिया, इसलिए इबादत से जवाब दो। इस दीन में शुक्र इख़्तियारी नहीं — यह तवक़्क़ो का जवाब है।

और देखिए कि इबादत की कौन सी दो क़िस्में ली गईं। 'सल्लि' — नमाज़: आपके जिस्म की, आपके वक़्त की, आपके आज़ा की इबादत। 'वन्हर' — क़ुर्बानी: आपके माल की इबादत, एक क़ीमती चीज़ क़ुर्बान करना, और फिर उसका गोश्त ग़रीबों में बाँटना।

बेटा, दोनों मिल कर पूरे इंसान को समेट लेते हैं: आप अपने घंटों का क्या करते हैं, और अपने पैसों का क्या।

और एक और बात है यहाँ, बेटा। उस वक़्त मक्का में लोग बुतों के लिए नमाज़ पढ़ते थे और उनके थानों पर क़ुर्बानी करते थे। तो इस हुक्म में एक तसहीह छुपी है: 'लि-रब्बिक' — अपने रब के लिए। दोनों का रुख़ सिर्फ़ उसी की तरफ़ कीजिए। जैसा अल्लाह ने कहीं और फ़रमाया: 'मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी, मेरा जीना और मेरा मरना, सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है।'

और बेटा, सूरह की ख़ूबसूरत तरतीब देखिए: पहले अता, फिर हुक्म। अल्लाह ख़ाली हाथ बंदे से इबादत नहीं माँगते। वो देते हैं, ख़ूब देते हैं, और फिर फ़रमाते हैं: अब नमाज़ पढ़ो।

बेटा, आप जो भी इबादत करते हैं, वो उस चीज़ का जवाब है जो पहले से मिल चुकी है — कभी पेशगी अदायगी नहीं।

कटा हुआ तो वो है

और फिर आख़िरी आयत, जो ताने को पलट देती है: 'इन्ना शानि-अक हुवल्-अब्तर — बेशक आपका दुश्मन — वही जड़ से कटा हुआ है।'

बेटा, 'शानि' उस शख़्स को कहते हैं जो हक़ारत के साथ नफ़रत करे। और अल्लाह फ़रमाते हैं: जो लफ़्ज़ उसने आप पर फेंका था, वो उसी का है।

और ताकीद देखिए: 'हुवा' — वही, ख़ास तौर पर वही, सिर्फ़ वही। अरबी में यह ज़मीर डालने से बात मख़्सूस हो जाती है: आप नहीं — वो।

बेटा, अब देखिए कि तारीख़ ने इस आयत के साथ क्या किया, क्योंकि यह क़ुरआन के सबसे ज़्यादा नज़र आने वाले पूरे होने वालों में से एक है।

वो लोग जिन्होंने मज़ाक़ उड़ाया: उनके नाम सिर्फ़ उस शख़्स की कहानी के हाशिए पर बचे हैं जिसका उन्होंने मज़ाक़ उड़ाया था। कोई अपने बच्चे का नाम उन पर नहीं रखता। किसी को उनकी औलाद का पता नहीं।

और वो शख़्स जिसे 'कटा हुआ' कहा गया? बेटा, इस वक़्त, इसी लम्हे, ज़मीन पर कहीं न कहीं कोई उनका नाम ले रहा है — अज़ान में, तशह्हुद में, दुरूद में। चौदह सदियाँ, अरबों लोग, और एक नाम जो इंसानी तारीख़ में सबसे ज़्यादा दोहराया गया। उनका 'सिलसिला' एक पूरी उम्मत निकला।

बेटा, एक और पहलू क़ाबिल-ए-ग़ौर है। उसके दुश्मन एक बात में सही थे: वो सिलसिले को बेटों से नापते थे। बस उनका पैमाना ग़लत था। अल्लाह ने उनका सिलसिला चलाया — मगर उनकी बेटी फ़ातिमा (रज़ि0) के ज़रिए, उनकी उम्मत के ज़रिए, और उनके पैग़ाम के ज़रिए।

तो क़ुरआन की सबसे छोटी सूरह यह सबक़ दे रही है: जिसे लोग आपका अंजाम कहते हैं, अल्लाह उसे आपकी इब्तिदा बना सकते हैं। और जो अल्लाह के किसी महबूब बंदे

को तकलीफ़ पहुँचाता है, वो ख़ामोशी से अपने मिटने के काग़ज़ पर दस्तख़त कर रहा होता है।

और बेटा, इसे अपने ऊपर भी लगाइए। जब कोई आपका मज़ाक़ उड़ाए किसी ऐसी कमी पर जो आपने चुनी ही नहीं — कोई नुक़सान, कोई कमी, घर के हालात, जिस्म की कोई बात — तो यह सूरह याद कीजिए। दुनिया उन पैमानों से नापती है जो अल्लाह इस्तेमाल ही नहीं करते। ताने का जवाब वैसे दीजिए जैसा नबी ﷺ को बताया गया: नमाज़ पढ़िए, दीजिए, और बाक़ी अल्लाह पर छोड़ दीजिए।

इस सूरह से क्या सीखा

1. दुनिया उन पैमानों से क़ीमत नापती है जो अल्लाह इस्तेमाल नहीं करते — उसके फ़ैसले को अपनी पहचान मत बनाइए।

2. अल्लाह ने एक नुक़सान के बदले वो फ़रावानी दी जिसके नाम का मतलब ही छलकना है।

3. अल्लाह मोमिन से जो लेते हैं, उसकी जगह कुछ बेहतर देने की तैयारी कर रहे होते हैं — यहाँ या वहाँ।

4. शुक्र की एक शक्ल है: जिस्म और वक़्त से नमाज़, और माल से क़ुर्बानी।

5. दोनों का रुख़ सिर्फ़ उसी की तरफ़ — 'लि-रब्बिक'।

6. इबादत हमेशा उस चीज़ का जवाब है जो पहले मिल चुकी है, कभी पेशगी अदायगी नहीं।

7. जो अल्लाह के बंदे का मज़ाक़ उड़ाता है वो अपना मिटना ख़ुद लिख रहा है — जवाब इबादत से दीजिए, बहस से नहीं।

या अल्लाह, हमें अपने रसूल ﷺ के कौसर से सैराब फ़रमाइए, और हमारी नमाज़ और हमारा देना ख़ालिस अपने लिए बना लीजिए। आमीन।